अगर आप सफलता पाना चाहते है तो दूसरों की इजाजत लेना बंद कर दीजिए दें।
– अज्ञात

समस्या से निजात मिलने की उम्मीद

आगामी तीन मई को लॉकडाउन हटेगा या बढ़ाया जाएगा, यह अभी साफ नहीं हुआ है लेकिन प्रवासी मजदूरों को उनके घर भेजने की अनुमति ने एक समस्या से निजात मिलने की उम्मीद जगा दी है। उनकी तरह ही अपने घरों से दूर रहकर पढ़ाई या कोचिंग करने वाले कई छात्र भी फंसे हुए थे।

आरती शाह।

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने देश में जगह–जगह फंसे प्रवासी मजदूरों, पर्यटकों और विद्यार्थियों को अपने घर जाने की इजाजत देकर न सिर्फ उन्हें बल्कि उनके परिजनों को भी भारी राहत दी है। इस तरह लॉकडाउन में फंसा एक बड़ा पेच सुलझ गया है। आगामी तीन मई को लॉकडाउन हटेगा या बढ़ाया जाएगा, यह अभी साफ नहीं हुआ है लेकिन प्रवासी मजदूरों को उनके घर भेजने की अनुमति ने एक समस्या से निजात मिलने की उम्मीद जगा दी है। उनकी तरह ही अपने घरों से दूर रहकर पढ़ाई या कोचिंग करने वाले कई छात्र भी फंसे हुए थे।

कुछ पर्यटक भी इधर–उधर थे। वे सभी अब चौन की सांस लेंगे, बशर्ते राज्य सरकारों की आपसी समझदारी से उनके परिवहन की समुचित व्यवस्था हो सके। बीते 24 मार्च को लॉकडाउन की घोषणा होते ही दिल्ली और मुंबई जैसे महानगरों से लाखों की संख्या में मजदूर–कामगार पैदल ही अपने गृह प्रदेशों की ओर निकल पड़े। इनमें से कुछ तो पहले झटके में अपने घर पहुंच गए लेकिन एक बड़ी संख्या को रोक लिया गया और क्वारंटीन सेंटरों में भेज दिया गया।

शहरों में ही रह गए कई लोगों के खाने–पीने की व्यवस्था की गई, पर वे अपने घर ही जाना चाहते थे क्योंकि यहां उनके पास कोई काम नहीं था। खाने–पीने का भी मुकम्मल इंतजाम सबके लिए नहीं हो पाया और वे भावनात्मक रूप से भी खुद को अकेला और असहाय महसूस कर रहे हैं। उन्हें उम्मीद है कि घर पर शायद उन्हें खेतों में काम मिल जाए। उन्होंने घर जाने की मांग को लेकर प्रदर्शन भी किए। उनकी दुर्दशा की खबरें पूरे देश को चिंता में डाल रही थीं।

राज्य सरकारों पर दबाव बढ़ रहा था क्योंकि मजदूरों की कमी से किसान भी परेशान थे। आखिरकार राज्य सरकारों ने अपने लोगों को वापस लाने का फैसला किया। प्रधानमंत्री के साथ बैठक में मुख्यमंत्रियों ने उन्हें वापस भेजने की मांग रखी जिसे केंद्र सरकार ने कई शर्तों के साथ मान लिया है। तय किया गया है कि जो लोग जाना चाहेंगे, उनकी स्क्रीनिंग की जाएगी। अगर उनमें कोविड–19 के कोई लक्षण नहीं दिखेंगे तो उन्हें जाने की अनुमति होगी। बसों का सैनिटाइजेशन होगा और उनमें सोशल डिस्टेंसिंग का ध्यान रखा जाएगा। डेस्टिनेशन पर पहुंचने के बाद लोगों की जांच होगी और उन्हें क्वारंटीन में रखा जाएगा। आगे जवाबदेही राज्य सरकारों की है कि घर पहुंचने पर मजदूरों को कोई दिक्कत न हो। कई लोगों के राशन कार्ड चूंकि शहरों में बने हैं इसलिए अपने गांव में उन्हें राशन नहीं मिल रहा। इस समस्या का निराकरण करना होगा। कोशिश होनी चाहिए कि जिन लोगों को खेतों में काम न मिले वे मनरेगा से अपनी जीविका अर्जित करें।

इस प्रकरण की विडंबना यह है कि एक तरफ सरकार कारखानों में उत्पादन शुरू करने की योजना बना रही है, दूसरी तरफ कार्यशक्ति उत्पादन केंद्रों से दूर जा रही है। मजदूर एकाध महीने बाद काम पर लौट आएं, इसे लेकर उनसे संवाद बना रहना चाहिए।

युक्तियों से अभिसिक्त

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

भरत का द्वंदात्मक चित्त भावविह्वल होकर उन समस्त युक्तियों से अभिसिक्त हो चुका है जिससे वो उस कलंक से मुक्त हो सकें जो अनायास ही अनचाहे उनके दामन से जुड़ गया। वो उन सभी प्रकल्पों को आजमा लेना चाहते हैं, जिससे उनकी आत्मा पर पड़ चुकी शिला सदा–सर्वदा के लिए हट जाए.....

भरत, हां यही नाम आज भी भ्रातृ स्नेह के अनुपम उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत किया जाता है लेकिन तत्समय वो एक ऐसी उलझी हुई मानसिक स्थिति के मकड़जाल में अपने को फंसा पाते हैं, जहां से निकलने का उन्हें कोई मार्ग नहीं सूझता। उन्हें प्रतीत होता है कि उनकी सारी कोशिशें मिथ्या सिद्ध होंगी और संसार उन्हें भ्रातृ द्रोही, सत्ता लोलुप और प्रमादी ही समझेगा। माता का अक्षम्य अपराध उनके माथे पर एक ऐसा दाग प्रक्षिप्त कर गया है, जो हमेशा उनका पीछा करता रहेगा।

संपादकीय

संकट का समय

सोशल मीडिया पर मुसलमानों से सब्जी और फल तक नहीं खरीदने की अपील हो रही है। शहरों की हाउसिंग सोसाइटियों में मुसलमानों को नहीं घुसने देने के लिए बैठकें हो रही हैं। इस प्रकार का वातावरण तो हमें 1947 की अवस्था में पहुंचा देगा। क्या हम देश का एक और विभाजन चाहते हैं? हम न भूलें कि आजादी के आंदोलन में भी राष्ट्रवादी मुसलमानों का पक्ष धीरे–धीरे कमजोर हुआ। धर्मांध और निहित स्वार्थी तत्वों ने ऐसा वातावरण बना दिया जिसमें ऐसे मुसलमानों की आवाज कमजोर हो गई जो विभाजन नहीं चाहते थे। खान अब्दुल्ल गफार खान ने विभाजन के निर्णय पर रोते हुए महात्मा गांधी से कहा कि आपने हमें भेड़ियों के हाथों सौंप दिया। भारतीय मुसलमानों में देश की मुख्यधारा के साथ चलने वाले लोग हमेशा रहे हैं। समर्थन न मिलने के कारण वे कमजोर हुए या उन्हें चुप होना पड़ा। कुछ की उनके लोगों ने ही हत्या कर दी। मुसलमानों को हम एक इकाई मान लेते हैं, जबकि ऐसा है नहीं। देवबंदी बरेलवी को सच्चा मुसलमान नहीं मानते। ये दोनों शियाओं को मुसलमान नहीं मानते और तीनों अहमदियों को मुसलमान नहीं मानते। शिया और अहमदिया तब्लीगी जमात के बिल्कुल खिलाफ हैं। वास्तव में देश के लिए यह ऐसे संकट का समय है जहां दोनों पक्षों के विवेकशील लोगों को आगे आना होगा। आपसी अविश्वास की खाई कम करने के लिए अनेक लोगों को अपनी बलि देने के लिए तैयार होना होगा। दुर्भाग्य यह है कि हमारे देश में जो स्वयं को लेफ्ट लिबरल कहते हैं उन्होंने भी इस स्थिति के पैदा होने में योगदान दिया है।

अगर कोई संगठन कोरोना जैसी महामारी के बारे में कहे कि उसका नाम तो केवल मुसलमानों को अलग करने या मस्जिदों को बंद करने के लिए लिया गया है तो इसे क्या कहा जाए।

धर्म की कट्टरता

अवधेश कुमार।

आज कोरोना संकट के साथ एक सामाजिक संकट भी पैदा हो गया है। देश में अल्पसंख्यक समुदाय के प्रति नफरत और संदेह की भावना बढ़ रही है। यह माहौल तब्लीगी जमात की गैर जिम्मेदाराना हरकत की वजह से बना है। आम हिंदुओं में यह धारणा बलवती हो रही है कि मुसलमान इस देश में रहते हुए भी मन से देश के साथ नहीं हैं। एक बड़ी आबादी के प्रति देश का बहुसंख्य समाज सशंकित रहे तो इसका असर पूरे देश की प्रगति पर पड़ता है। कुछ मुस्लिम संगठनों का व्यवहार वाकई दुर्भाग्यपूर्ण रहा है। अगर कोई संगठन कोरोना जैसी महामारी के बारे में कहे कि उसका नाम तो केवल मुसलमानों को अलग करने या मस्जिदों को बंद करने के लिए लिया गया है तो इसे क्या कहा जाए।

कुछ संगठन प्रमुखों ने अपने अनुयायियों से कहा कि तुम मर जाओ लेकिन मस्जिद नहीं छोड़ो, और उसके सदस्य सारी दुनिया की धारा के विपरीत जाकर व्यवहार में इस पर अडिग रहे। उनके अंदर मजहब के नाम पर इतना जहर भर दिया गया था कि उनमें से ज्यादातर लाख अपील के बावजूद अपना टेस्ट कराने या क्वारंटीन होने के लिए सामने नहीं आए। उन्होंने

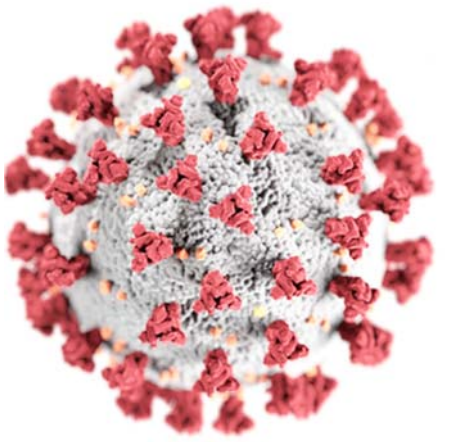

स्वास्थ्यकर्मियों की टीम पर हमले भी किए। इससे धारणा यह बन रही है कि कुछ मुस्लिम संगठन जानबूझकर भारत में कोरोना फैलाने के इरादे से ऐसा कर रहे हैं ताकि उनके साथ भारी संख्या में लोग मरें। उन्हें कोरोना बम तक कहा जा रहा है। लेकिन वे जानते हुए लोगों को अपने साथ मार डालने के इरादे से ऐसा कर रहे हैं, इसे मान लेना उचित नहीं होगा।

यह केवल मजहबी अंधता का व्यवहार है कि हम तो अल्लाह के बताए रास्ते पर चल रहे हैं, कोरोना के नाम पर हमें उस रास्ते पर चलने से रोका जा रहा है, इसलिए इनके साथ हमें लड़ना है। इसका सबसे दुर्भाग्यपूर्ण पहलू यह है कि मुस्लिम समाज की ओर से इनका विरोध नहीं हो रहा है। उलटे मुसलमानों के जाने–पहचाने चेहरे इनके बचाव में उतर गए हैं। वे मजहबी नेता और संगठन जो जमात के कट्टर विरोधी रहे हैं, इसके प्रमुख मौलाना मोहम्मद साद कांधलवी के कटु निंदक रहे हैं, वे भी उनका सरेआम समर्थन कर रहे हैं। हिंदुओं के किसी संगठन ने जमातियों जैसा आचरण किया होता तो समाज से ही उसका तीखा विरोध हो रहा होता, लेकिन यही व्यवहार मुस्लिम समुदाय में नहीं दिखता। इसने देश का गुस्सा ज्यादा बढ़ाया है।

देखा जाए तो यह माहौल एकाएक नहीं बना है। पिछले कुछ सालों के घटनाक्रम पर नजर दौड़ाएं तो पाएंगे कि धीरे–धीरे यह स्थिति बनी है। अनेक मुद्दों पर मुसलमानों के बीच से कट्टर सांप्रदायिक तत्व ऐसे जहरीले बयान देते हैं जिन पर बोलने तक की आवश्यकता नहीं थी। एक नेता छाती ठोंककर कहता है कि हमें गोली भी मार दो तो भारत माता की जय नहीं बोलूंगा और उसको समर्थन मिलता है। कम संख्या में ही सही, पर ऐसे कई मुसलमान नेता हैं जो इनसे सहमत नहीं हैं, लेकिन उनकी आवाज सामने नहीं आती। वे अपने समाज के प्रतिनिधि नहीं बन पाते। सचाई यह है कि हजारों की संख्या में ऐसे मुसलमान हैं जो जमात को अपराधी मानते हैं।

सूडोकु नवताल-5341

मध्यम

3				8				9
		8	6		9	5		
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
		6	4		5	8		
9				1				7

Jagrutidaan.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5340 का हल

2	3	8	5	1	9	6	4	7
9	6	4	7	3	8	2	5	1
5	1	7	4	6	2	8	3	9
3	2	5	1	9	7	4	6	8
1	8	9	6	4	3	7	2	5
4	7	6	2	8	5	1	9	3
6	4	3	8	5	1	9	7	2
8	9	2	3	7	4	5	1	6
7	5	1	9	2	6	3	8	4

अपना ब्लॉग

उदारता और विवेक

मोहन। कोई हिंदू या हिंदू संगठन इन लोगों की नजर में कुछ गलत करता है, तो वे अतिवाद की सीमा तक प्रचार करते हैं और इसके खिलाफ आम हिंदुओं की प्रतिक्रिया का उपहास उड़ाते हैं। दूसरी ओर मुस्लिम समूह कोई बड़ी गलती भी करते हैं तो उसे वे न सिर्फ नजरअंदाज करते हैं बल्कि उसकी मुखालफत होती है तो इसे हिंदू सांप्रदायिकता या फासीवाद कहकर पूरा वातावरण बिगाड़ देते हैं। इससे कट्टर धर्मांध मुसलमान मजबूत होते हैं और आम मुसलमानों के खिलाफ माहौल और दृढ़ होता है। इनको हम विवेकशील व्यक्तियों की श्रेणी में नहीं रख सकते। ऐसे विवेकशील लोग हिंदू और मुस्लिम, दोनों पक्षों से चाहिए जिनके अंदर भारत राष्ट्र की वास्तविक कल्पना हो। वे सामने आएं और माहौल को बेहतर बनाने के लिए काम करें। वे इनके टखने से ऊपर पाजामा पहनने, लोटा रखने, दांतों में ब्रश नहीं करने जैसे तौर–तरीकों को स्वीकार नहीं करते। इसलिए आज विचार करने की आवश्यकता है कि मुसलमानों के अंदर मौजूद उदारवादी आवाज को बल कैसे प्रदान किया जाए?